ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

'लाल क्रान्ति के पंजे में':गुलामी और दमन के साम्राज्य पर वार करने वाली महत्वपूर्ण कड़ी

डॉ. मधुलिका बेन पटेल
सहायक प्रोफेसर
हिन्दी विभाग
तमिलनाडु केन्द्रीय विश्वविद्यालय
ben.madhulika@gmail.com

क्रान्ति के नाम से सत्ताएँ डर जाती हैं। शोषणमुक्त समाज का सपना देखने वाले उसकी आँखों में कील की तरह चुभते हैं। वे डर जाती हैं कि अब उनकी मनमानियाँ नहीं चलेंगी। उनके शोषण व दमन का साम्राज्य समाप्त हो जाएगा। वे डर जाती हैं कि उनके जुल्मों के खिलाफ बग़ावत उठ खड़ी होगी। पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' का एकांकीय नाटक 'लाल क्रान्ति के पंजे में' ऐसी ही रचना है, जिसने ब्रिटीश साम्राज्य की नींदे उड़ा दी थी। गोरखपुर से प्रकाशित होने वाली पत्रिका 'स्वदेश' के विजयांक (1924) में यह लघु नाटक प्रकाशित हुआ था। इस नाटक के माध्यम से रूस के बहाने हिन्दुस्तान की आवाम को जगाने का प्रयत्न किया गया है। 1917 ई. में गरीबों के साम्राज्य का स्वप्न रूस की समाजवादी क्रान्ति के माध्यम से साकार हो गया था। रुस से उठी लहर हिन्दुस्तान तक आ पहुँची रही थी। ब्रिटिश राज के तमाम दमन, उत्पीड़न और प्रतिबंध के बावजूद चेतना की आँधी न थमी। देश में मौजूद बाहरी और अन्दरुनी गुलामी के समर्थकों के खिलाफ बगावत उठ खड़ी हुई थी। इस दिशा में एक ओर क्रान्तिकारी व आन्दोलनकारी सक्रिय थे, तो दूसरी ओर लेखकों ने भी अपनी रचनाओं के माध्यम से जनता को झकझोरने का काम किया।

विद्रोही चेतना के धनी पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' ने ऐसे खतरनाक दौर में भी बड़े साहस के साथ लेखन जारी रखा। ''लाल क्रान्ति के पंजे में' एक ऐतिहासिक नाटक है। जिसका आधार 1917 की क्रान्ति है। इसे युगान्तरकारी घटना इसलिए माना जाना चाहिए क्योंकि बोल्शेविक ज़ारशाही की पुरानी एवं मज़बूत राजसत्ता को धराशायी कर जन आकांक्षाओं को साकार कर सके। इस क्रान्ति की वास्तविक उपलब्धि है एक विचार, एक विप्लवी स्वप्न को—सर्वहारा का—'गरीबों के राज्य का'—सूत्रपात करना। इन असम्भव सी दिखाई देने वाली कामयाबियों ने दुनियाँ भर को चौंका दिया। 20 वीं सदी के पहले दशक से ही भारत में मार्क्सवाद की चर्चा शुरु हो गई थी और क्रान्तिकारी गतिविधियों से भी यह देश अपरिचित न था परन्तु 1917 की क्रान्ति ने यहाँ के हर तबके को कुछ सोचने और कुछ करने के लिए झकझोर दिया। उग्र ने 'लाल क्रान्ति के पंजे में' लघु नाटक क्यों लिखा, इसके निहित प्रयोजन खुलने लगते हैं। हमारे मुल्क में साम्राज्यवादी वृत्ति और पूँजीवादी शक्तियों के गठबंधन से ही तो ब्रिटिश सत्ता का निरंकुश स्वेच्छाचारी शासन चल रहा है। बोल्शेविकों के मूल मंत्र का अनुसरण करने से ही हम भी स्वतंत्रता एवं शोषण मुक्त समाजवादी व्यवस्था की संकल्पना पूरी कर सकते हैं। अक्टूबर की क्रान्ति ने इसका मार्ग प्रशस्त कर दिया है। यही 'लाल क्रान्ति के पंजे में' का मुखर संकेत है।''[1]

ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

कहना न होगा कि यह नाटक ब्रिटीश सरकार द्वारा जब्त किया गया था। सत्ता पलटने का अंकन होते देख साम्राज्यवादी शक्तियाँ बौखला उठी थी। लोगों के भीतर चेतना जगाने का प्रयास भी अपराध घोषित किया गया था। ऐसे में रुस की क्रान्ति को विषय बना कर नाटक लिखना ब्रिटिश सरकार को कितना नागवार गुजरा होगा, सहज ही इसका अन्दाजा लगाया जा सकता है। खौफनाक दमन के बावजूद लोगों ने हिम्मत न खोई। क्रान्तिकारी ऐसा समाज चाहते थे, जो गरीबों का हो। अरसे से सताई गई जातियाँ भय व शोषण मुक्त समाज का स्वप्न देख रही थी। मात्र सत्ता पलटना उनका उद्देश्य न था। उस समय लोग एक ओर अंग्रेजों के दमन से आक्रान्त थे, तो दूसरी ओर देश में ही फल–फूल रही अलग तरह की ताकतें सदियों से जड़ जमाए थीं। 'लाल क्रान्ति के पंजे में' नाटक के माध्यम से पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' सिर्फ सत्ता पलटने का स्वप्न नहीं देख रहे थे, वरन् वे सच्चे अर्थों में जुल्मों के साम्राज्य को समाप्त करना चाहते थे। नाटक के दूसरे दृश्य में ट्रोजकी के कथन से साफ जाहिर है कि वे दमन आधारित राज्य का पूरी तरह बहिष्कार करते थे। ''ट्रोजकी : तुम लोग यहाँ क्या कर रहे हो? अपने–अपने काम पर जाओ। वीरों ! अभी विश्राम लेने या गप्पें मारने का समय नहीं आया है। ज़ार के सिंहासन त्याग करने से क्या होता है। साँप गया तो साँप का भाई आया। हमें रुस की काया पलट करना है, गरीबों का राज्य स्थापित करना है। ग्रांडड्यूक या करन्सकी गरीबों के समर्थक नहीं, धनिकों के दास हैं। गरीबों का राज्य स्थापित करने के लिए पूँजीवाद का खून करना होगा और फिर उसी रक्त गंगा में स्नान कर पवित्र होने के बाद उसी खून से गरीब–सम्राट महात्मा लेनिन का अभिषेक करना होगा।''[2]

जनता की एकजुटता की ताकत दुनियाँ की हर सत्ताओं से बढ़ कर है। बस उनको जगाने भर की देर है। कोई भी ताकत उसे दबा नहीं सकती। नाटक के माध्यम से उग्र जी रुस की क्रूर ज़ारशाही शासन को जड़ से उखाड़ फेंकने वाली ताकत की पहचान कराते हैं। दरअसल, हिन्दुस्तान में भी ऐसी ही लहर की आवश्यकता थी, जो मुट्ठी भर अंग्रेजों को जड़ से उखाड़ फेके। नाटक के दूसरे दृश्य में गुप्तचरों की बातचीत से पता चलता है कि लोकमत का सामना रुस का जार भी न कर सका। ''गुप्तचर 1 : सचमुच सिंहासन त्याग दिया ? गुप्तचर 2 : हाँ, हाँ, सचमुच। त्याग कैसे न करता, प्रबल लोकमत का सामना था। सम्राट क्या है। लोकमत का पुतला ही न। लोकमत के पुतले ने अपने को लोकमत का विधाता और संहर्ता समझ लिया था, यह सिंहासन त्याग उसी लोकमत के अपमान का साधारण दंड है।''[3] अंग्रेजी सरकार भारतवासियों पर जुल्म करने का कोई मौका नहीं छोड़ती थी। लेखकों द्वारा आँखों देखे विवरण से ज्ञात होता है कि लोगों का उत्साह चरम पर था। वे अपने अहिंसात्मक आंदोलनों से भी साम्राज्यवादी ताकतों की नींव हिला रहे थे। सैनिक कार्यालय, आगरा से प्रकाशित होने वाली पुस्तक 'आगरा सत्याग्रह संग्राम' में महेन्द्र लिखते हैं, ''तीसरी मई को सुबह चार बजे के करीब पुलिस ने सत्याग्रह छावनी पर धावा बोला। पहले पुलिस सुपरीटेंडेंट मि. रोबिन्सन पुलिस के चन्द सिपाहियों के साथ छावनी के फाटक पर पहुँचे और फाटक खोलने को कहा। स्वयं सेवकों ने फाटक खोलने से इनकार कर दिया क्योंकि उनके बहादुर सेनापति तृतीय प्रथम सेवक पण्डित जगन प्रसाद रावत ने यह कह दिया कि मैं तलाशी के बाद वारण्ट को रद्दी कागज का एक टुकड़ा समझता हूँ

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)

ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

और तलाशी देने से इनकार करता हूँ। इस पर पुलिस ने फाटक तोड़ने की कोशिश की। घंटों में वह फाटक तोड़ पाए। शूरवीर सत्याग्रही स्वयं सेवक फाटक के सामने लेट गए। मि. रोबिन्सन और शहर के कोतवाल उनके ऊपर होकर उन्हें रौंधते हुए निकले जिससे कई स्वयं सेवकों को चोटें आई। किसी के सीने पर और किसी के पेट पर। एक स्वयं सेवक के फौते में खुद मि. रोबिन्सन के जूते की ठोकर लगी जिससे वह बेहोश हो गया।''[4]

पुलिस के अमानवीय अत्याचारों के गावजूद जनता डटी रही। उसकी असीम शक्ति को उग्र जी नाटक के चौथे दृश्य में गीत के माध्यम से करते हैं। गीत में एक ओर सैन्य दल–बल से सम्पन्न सम्राट था, जिसके डर से सारा संसार थरथराता था। दूसरी ओर जनता का सामना होने पर अब वह अति साधारण रुप में कुल्हाड़ी लेकर लकड़ी काटने जाता है। जो पहले लोगों का रक्त चूस कर अपने चापलूसों को आबाद करता था, अब वह स्वयं दूसरों से माँग कर खाने के लिए मजबूर हो गया।

''जो कल सम्राट था वह आज कैदी–सा दिखाता है
दिवाकर आग बरसाकर के अस्ताचल को जाता है
जिसे कल देखकर सुरसैन्य थरथर काँप उठता था
उसे नरक्षुद्र का भय है, व डर से थरथराता है।
अँगुलियों से जो अपने मुलज़िमों का काटता सर था
वही अब काटने लकड़ी कुल्हाड़ा ले के जाता है।
जो कल तक चापलूसों की जमातों को खिलाता था।
वही अब चार दाने दूसरों से लेके खाता है।''[5]

यह एक ऐसा समय था जब ब्रिटिश हुकूमत ने आजादी, मुक्ति, समाजवाद, क्रान्ति जैसे शब्दों को ही प्रतिबंधित कर दिया था। ऐसे समय में पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' ने बड़े साहस के साथ रुस की समाजवादी क्रान्ति पर नाटक लिखा। इस संबंध में सत्येन्द्र कुमार तनेजा लिखते हैं, ''इस एकांकी को विशिष्ट एवं महत्वपूर्ण इसलिए मानना होगा क्योंकि उग्र सम्भवतः हिन्दी के पहले रचनाकार हैं जिन्होंने 1917 की क्रान्ति पर लघु–नाटक लिखने का साहस दिखाया।''[6] आजादी की भावना से ओत–प्रोत रचनाओं का जब्त किया जाना, वास्तव में अंग्रेजी हुकूमत की बौखलाहट का नतीजा था। इस नाटक में उग्र जी ने रुस की क्रान्ति के जनक लेनिन के माध्यम से पूँजीवादी शक्तियों के विनाश पर ये शब्द कहलवाते हैं। ''लेनिन : (स्वगत) सुन्दर! सुन्दरतर। सुन्दरतम्! भैरवी नाच रही हैं। संसार के कूड़े विराट काल के मुँह में झोंके जा रहे हैं। कैसा अपूर्व दृश्य है! जी चाहता है लोगों से लाखों आँखें, उधार माँग कर, इस छवि को देखूँ। यह नज़ारा फिर कभी दिखाई देगा? यह मेरे जन्म भर की तपस्या का फल है। (रुद्र रुप से) हा हा हा हा ! संसार का सबसे बड़ा शैतान पूँजीवाद, दम तोड़ रहा है। आखिरी साँस ले रहा है। सड़कों पर बहती हुई, पूँजीपतियों के रक्त की धाराओं को देख कर हृदय चिल्लाने लगता है कि यह उन्हीं गरीबों का गाढ़ा रक्त है जिसे पूँजीपति सहज में ही पचा लेना चाहते थे।''[7]
उग्र जी जनता को अपनी रचना के माध्यम से विश्वास दिलाना चाहते थे कि अगर ज़ार जैसे क्रूर शासक से रुस के लोग मुक्त हो सकते हैं, तो भारत की आवाम क्यों नहीं।

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)

ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

नाटक के आखिरी दृश्य में लेनिन संतोष की साँस लेते हुए कहते हैं, ''कैसा शुभ संवाद है। अत्याचारी को उसके कुकर्मों का दंड मिल गया। राक्षस का नाश हो गया। पूँजीवाद का समर्थक कुत्तों की मौत मार डाला गया। आज हमारा प्यारा रुस पवित्र हो गया। आज प्यारी मातृभूमि के मुख पर मुस्कुराहट दिखाई पड़ रही है। माँ! इतने से ही संतोष कर लो! ज़ार ही के खून ही से संसार के अन्धों की आँखें खुल जाएँ और वे गरीबों को उनकी झोपड़ियाँ लौटा दें।''[8] लघु नाटक के माध्यम से उग्र जी ने देशवासियों को जगाने का प्रयत्न किया है। इस नाटक में छोटे–छोटे आठ दृश्यों की योजना की गई है। यह नाटक रुस की समाजवादी क्रान्ति की पृष्ठभूमि को आधार बना कर लिखा गया है। दरअसल यहाँ लेखक का मूल उद्देश्य है भारत को अंग्रेजो की दासता से मुक्ति दिलाना। जहाँ तक इसकी भाषा का सवाल है तो उग्र जी कसी बुनी भाषा का प्रयोग करते हैं। भावावेश में कहे गए संवादों में भी बिखराव की स्थिति नहीं दिखाई पड़ती। इस संबंध में सत्येंद्र कुमार तनेजा लिखते हैं, ''इस लघु नाटक की संवाद–शक्ति का वास्तविक कारण है उग्र की भाषा–शैली। इस दिशा में उग्र की क्षमता अद्वितीय कही जाएगी, उनका शब्द चयन शब्द–विन्यास, नाट्य स्थिति, पात्र की मनः स्थिति और नाटकीय व्यापार के अनुरुप वाक्य–संरचना कुल मिला कर इसके गठन–कौशल पर उग्र का सहज अधिकार है। 'लाल क्रान्ति के पंजे में' सभी प्रकार की स्थितियों के अनुरुप संवाद मिलेंगे–छोटे, चुस्त–दुरुस्त, लम्बे–संवाद, सीधे कार्य–प्रधान या गम्भीर विवेचनात्मक। बोल्शेविक आदर्शों को रेखांकित करने वाले बोल्शेविक–गुप्तचरों के संवाद विशेष रुप से 'लोकमत' की व्याख्या करने वाले संवाद जिस सुबोध, युक्ति–युक्त पर गम्भीर एवं अर्थपूर्ण रीति से प्रस्तुत किए गए हैं, वह प्रशंसनीय हैं। इसी नीति पर चलकर भारी–भरकम वैचारिक शब्दावली को सँभाला गया है, संवाद कहीं बोझिल नहीं हुए। उधर ज़ार के लम्बे एकालापों की भाषा संवेदन–स्पर्शी है जो उसके अन्तर्मन की वेदना और विवशता को जीवन्त करती है। उग्र का अभिव्यक्ति पक्ष यहाँ भी प्रभावोत्पादक है। इस सन्दर्भ में 'लाल क्रान्ति के पंजे में' के सातवें दृश्य की दृश्य–संरचना अलग और श्रेष्ठ कही जा सकती है। कारागार की कोठरी में ज़ार बन्दी है। भयंकर अंधकार है, आधी रात का समय है पर ज़ार अशान्त है और अपने आपको कोस रहा है : कैसी भयानक रात्रि है! यह मेरे दुर्भाग्य की तरह काली और क्रान्ति की तरह भयानक है। न जाने क्यों आज आँखें नहीं लग रही हैं। हृदय रो रहा है। क्या कोई अनिष्ट होने वाला है?' यहाँ एक ऐसा उपयुक्त रंग–परिवेश दृश्यांकित किया गया है जो ज़ार की भावी मृत्यु के पूर्वाभास को व्यंजित करे। किसी भी दृष्टि से इस संवाद को परखें, लेखक अपने प्रयोजन में सफल रहा है।''[9]

यह नाटक वास्तव में सर्वश्रेष्ठ कृतियों में से एक है। इतिहास के पन्ने पर अपनी जोरदार उपस्थिति दर्ज कराती हुई सी। जिसकी धमक से बन्दूकों व तोपों से लैस सत्ता के माथे पर बल पड़ गए। ''1920–25 के हिन्दी नाट्य–साहित्य की वस्तुस्थिति को सामने रखे और इस पृष्ठभूमि में 'लाल क्रान्ति के पंजे में' का मूल्यांकन करें तो यह स्वीकार करने में कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिए कि यह नाट्य–कृति कितनी विशिष्ट और कितनी श्रेष्ठ मानी जा सकती है। इस लघु नाटक का कथ्य एक ओर गम्भीर विचार–पुष्ट तत्व समेटे हुए है, दूसरी ओर इसी कृति में जनप्रिय भावनाओं को उद्वेलित करने की यथेष्ट क्षमता निहित है।

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)

ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

ध्यान उस नाटकीय संतुलन पर जाता है कि कैसे उग्र ने बहुआयामी विषय को उठाया और कैसी कुशलता के साथ उसे शिल्पवद्ध किया। 'लाल क्रान्ति' का विविधधर्मी संघर्ष इसके कार्य व्यापार को गति एवं शक्ति प्रदान करती है।''[10] पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' गजब के शब्द शिल्पी थे। विद्रोह की आग न सिर्फ उनके लेखन में दिखाई देती है, बल्कि उनका समूचा जीवन इस आग में तपा था। उनकी उग्र चेतना के कारण इस नाटक के अलावा अनेक कहानियाँ भी ज़ब्त की गई थी। यही नहीं, उन्हें कई बार जेल भी जाना पड़ा था। अपने देश के लिए समर्पित लेखकों को सत्ता का कतई खौफ न था। उन्होंने रचनाओं के माध्यम से आजादी की भावना को गति देने में अपनी अहम भूमिका निभाई। 'लाल क्रान्ति के पंजे में' ऐसी ही एक महत्वपूर्ण कड़ी थी।

---

[1] तनेजा, सत्येन्द्र कुमार : सितम की इन्तिहा क्या है ? ; राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली , प्रथम संस्करण 2010 पृ, 346
[2] तनेजा, सत्येन्द्र कुमार : सितम की इन्तिहा क्या है ? ; राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली , प्रथम संस्करण 2010 पृ, 360
[3] तनेजा, सत्येन्द्र कुमार : सितम की इन्तिहा क्या है ? ; राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली , प्रथम संस्करण 2010 पृ, 359
[4] आगरा सत्याग्रह संग्राम, सैनिक कार्यालय, आगरा (राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली) पृ, 10
[5] तनेजा, सत्येन्द्र कुमार : सितम की इन्तिहा क्या है ? ; राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली , प्रथम संस्करण 2010 पृ, 362 373
[6] तनेजा, सत्येन्द्र कुमार : सितम की इन्तिहा क्या है ? ; राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली , प्रथम संस्करण 2010 पृ, 344
[7] तनेजा, सत्येन्द्र कुमार : सितम की इन्तिहा क्या है ? ; राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली , प्रथम संस्करण 2010 पृ, 365
[8] तनेजा, सत्येन्द्र कुमार : सितम की इन्तिहा क्या है ? ; राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली , प्रथम संस्करण 2010 पृ, 370
[9] तनेजा, सत्येन्द्र कुमार : सितम की इन्तिहा क्या है ? ; राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली , प्रथम संस्करण 2010 पृ, 349
[10] तनेजा, सत्येन्द्र कुमार : सितम की इन्तिहा क्या है ? ; राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली , प्रथम संस्करण 2010 पृ, 351

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)